लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या:3; जुलाई-दिसंबर, 2021

शहंशाह आलम की कविताएँ

1.जमूरा

जमूरे, हम क्या हैं ?

हम यायावर हैं यायावरी ही करते हैं
हम ख़ानाबदोश हैं ख़ानाबदोशी ही करते हैं

जमूरे, हम यायावरी कर सकते हैं
हम ख़ानाबदोशी कर सकते हैं
तो क्या हम प्रेम नहीं कर सकते ?

नहीं उस्ताद, हम प्रेम नहीं कर सकते
प्रेम करने के लिए तारों-भरी रातें चाहिए
इस काम के लिए उजालों-भरी सुबहें चाहिए
जिनका कि हमारी दुनिया में आना वर्जित है

जमूरे, तू ही भेद खोल कि ये सारी चीज़ें
हमारे वास्ते वर्जित क्यों हैं, निषिद्ध क्यों हैं ?

उस्ताद, हमारा कोई देश नहीं
जिस तरह हमारा कोई घर नहीं
जिस तरह हमारा कोई पेड़ नहीं

और उस्ताद, जिनके पास
बस खुला आसमान होता है
बस ज़रा-सी धरती होती है उधार की
उनको प्रेम करने का हक़ नहीं होता

और उस्ताद, बस इसी वास्ते
कोई यायावर कोई ख़ानाबदोश
कभी प्रेम नहीं करते।

2. डुगडुगी

डुगडुगी मुनादी करने का छोटा नगाड़ा
जिसे मैंने मध्यप्रदेश के कटनी स्टेशन पर
खिलौने बेचने वाले के हाथों में बजते हुए देखा

खिलौने बेचने वाले की यह मुनादी
उसके अपने पेट के लिए थी
उसकी बीवी के लिए, बच्चों के लिए
उसके वाल्दैन होंगे तो उनके लिए भी थी

चमड़ा चढ़ा हुआ छोटे मुँह का यह बाजा
जिसे बंदर को नचाने वालों को
भालू को नचाने वालों को
जादू का खेल दिखाने वालों को

बजाते हुए मैंने देखा था बहुतों दफ़ा
पेट का व्याकरण सुधारने की ख़ातिर

पेट का व्याकरण सबसे कठिन जो होता है
सारे व्याकरण को छोड़
यह डुगडुगी
आज मैं बजाना चाहता हूँ
उस खिलौने बेचने वाले के एवज़
सबके भीतर की मुहब्बत को जगाने के लिए
जो मुहब्बत सोई पड़ी दिखाई देती है
आदमी को मदद पहुँचाने के हर बुरे वक़्त में।

3. गुलेलची

यह वक़्त एक गुलेलची से बहुत-कुछ सीखने का है

हम सीख सकते हैं उससे कंकड़ या मिट्टी का गुलेला बनाना
वही गुलेला जिसको गुलेल से फेंककर किसी को मारा जाता है
या हम सीख सकते हैं एक मारक गुलेल कैसे बनाई जाती है

मेरे पिता एक गुलेलची थे सो मैं भी गुलेलबाज़ी में निपुण हूँ

एक गुलेलची का मिज़ाज ऐसा होना चाहिए
कि वह अपना हर काम इतमीनान से करे

निशाना लगाना इतमीनान का ही तो काम है
आप निशाना लगाते हुए ज़रा-सा भी अधीर हुए
तो आपका अचूक निशाना चूक सकता है अपने लक्ष्य से
और आप अपनी अधीरता के कारण ख़ुद शिकार हो सकते हैं

यही इतमीनान आपको कोई नदी पार करते हुए
यही इतमीनान आपको कोई बीहड़ पार करते हुए
यही इतमीनान आपको कोई सड़क पार करते हुए
ख़ुद के अंदर रखना होता है ताकि आपको भय परेशान न करे

यही सबकुछ मेरे पिता मुझको बतौर तंबीह बताया करते थे
जो कुछ मैं आपको एक गुलेलची की हैसियत से आज बता रहा हूँ

आपका शत्रु आपके दरवाज़े तक आ पहुँचा है बेखटक

आपका शत्रु चतुर है जिस तरह कोई अंग्रेज़ चतुर हुआ करता है
तभी शत्रु आपको ढेर ख़्वाब दिखाता है आपके घर में बने रहने के लिए

उसकी तहज़ीब उसकी बोलचाल ऐसी है कि उसी को आप दोस्त मान लेते हैं
और उससे सच्ची दोस्ती निभाने के लिए आप मेरी लिंचिंग करते हैं

आप मुझसे सब्ज़ियाँ नहीं ख़रीदते आप मेरे हाथों से खाने का सामान नहीं लेते
या आपको लगता है कि मेरे जैसा गुलेलची आपके बीच इतने दिन रह कैसे गया

ऐसा लगने में दोष आपका नहीं आपके घर घुस आए उस शिकारी का है
जो आपकी बेइतमीनानी का शिकार इतमीनान से करना जानता है।

4. छाता

एक :

मेरे पास घर नहीं है परंतु छाता है
तुम्हारे पास घर है किंतु छाता नहीं है

तुम दुबके रहते हो अपने घर में
मैं लड़ता रहता हूँ सिरफिरी हवाओं से
अपने छाते को लड़ने का सामान बनाकर

तभी मैं जिस्म तो छाता साया मेरा
निकला हुआ हूँ तवील सफ़र पर

दो :

घूमता हूँ बारिश के काफ़िले का हिस्सा बनकर
तुम मेहमाँ ठहरे चिलचिलाती धूप में मेरे यहाँ आए

मेरा छाता अब तुम्हीं का हुआ मुसाफ़िर
और बदले में धूप मेरी हुई सदियों तक के लिए
तीन :

जिस तरह चाँद नहीं थकते
जिस तरह सितारे नहीं थकते

छाता भी कहाँ थकता है कभी
जिस तरह थकते नहीं कामगार पिता

चार :

मेरा बदन मिट्टी का रहा हमेशा से
तुमने बतलाया तुम्हारा बदन लोहे का

मेरे बदन को कहाँ गलने दिया मेरे छाते ने
तुम ज़ंग खाए लोहे के जैसे हुए कबके

पाँच :

क्या छाता रच सकता है कोई भाषा
तुम जब युद्ध रच सकते हो
तुम जब मार-काट रच सकते हो
रच सकते हो बलात्कार और हत्याएँ

कोई छाता कोई भाषा काहे नहीं रच सकता
छाता जबकि मेरा छाता है हमेशा भाषा में जीता हुआ।

संपर्क सूत्र:
संप्रति, बिहार विधान परिषद् के प्रकाशन विभाग में कार्यरत
हुसैन कॉलोनी, नोहसा बाग़ीचा, नोहसा रोड,
फुलवारीशरीफ़, पटना-801505, बिहार।
ई-मेइल: shahanshahalam01@gmail.com